E.STUDY MATERIAL
FOR B.A. PART-I

BY-DR. RAKESH KUMAR SINGH
G.D. COLLEGE - BAGAHA
Mob 9576936617

Q. ईश्वर सिद्धान्त के रूप में सर्वेश्वरवाद (Pantheism) की समीक्षात्मक व्याख्या।

Ans:- सर्वेश्वरवाद या केवलोपादानेश्वरवाद (Pantheism) के अनुसार ईश्वर ही एकमात्र सत्यमार्थ सत्ता है और वह अनन्त तथा सर्वव्यापक है। सर्वेश्वरवाद या केवलोपादानेश्वरवाद को अंग्रेजी में Pantheism कहते हैं। यह Pantheism शब्द दो शब्द Pan + Theos से बना है जिसमें Pan = all तथा Theos = God होता है। अर्थात All is God. इसके अनुसार ईश्वर ही सम्पूर्ण सत्ता है और सम्पूर्ण सत्ता ईश्वर है। अतः ईश्वर ही सब कुछ है और सब कुछ ही ईश्वर है। इसे ही सर्वेश्वरवाद कहा जाता है।

"सर्वेश्वरवाद या केवलोपादानेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर एक है। यह असीम तथा सर्वव्यापी है। यह ईश्वर स्वतन्त्र, अनादि तथा अनन्त है। यह स्वयंभू है। सर्वेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर और विश्व का संबन्ध अभिन्न एवं अवियोज्य है। ईश्वर के बिना विश्व की कल्पना करना कारण के बिना कार्य की कल्पना करने के समान है। अतः बिना विश्व के ईश्वर की कल्पना करना वैसा ही है जैसे कार्य के बिना कारण की कल्पना करना। ईश्वर विश्वमय है और विश्व ईश्वरमय है। दोनों को एक दूसरे से पृथक करना असंभव है। इसलिए इन्हे अवियोज्य कहा जाता है।

इस सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर और विश्व एक दूसरे के लिए अनिवार्य है क्योंकि विश्व का आधार ईश्वर है और विश्व के माध्यम से ही ईश्वर अपने को स्वाभाविक रूप से व्यक्त कर पाता है। ईश्वर विश्व की रचना किसी काल-विशेष में नहीं करता। ईश्वर और विश्व में कालिक संबन्ध नहीं है बल्कि दोनों में शाश्वत संबंध है। दोनों चिरंतन हैं। विश्व शाश्वत रूप से ईश्वर पर निर्भर है और ईश्वर शाश्वत रूप से विश्व में